आर्य खालसा हिन्दुओं से अन्याय देश की हत्या

लेखक : मानवेशपुरी, भूतपूर्व सेक्शन आफिसर, भारत सरक

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली–110001

मानव मात्र के प्रति प्रेमभाव जगाने वाले वेद मंत्र

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।।2।। ऋग्वेद

हो विचार समान सब के, चित्त मन सब एक हों।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।४।।

।। गायत्री ।।

ओम् भूर्भुव: स्व:। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्।।

हे सर्वरक्षक, प्राणों से प्यारे दुःखहर्ता, सुख प्रदाता, संसार के निर्माता, वरने योग्य तेजस्वरूप, देवों के देव परमेश्वर, हम आपका ध्यान करते हैं! आप अपने तेज से हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर प्रेषित करें।

शारीरिक निरोगता, मानसिक शान्ति, बौद्धिक तीक्ष्णता,
आत्मिक आनन्द व आतंकवाद की समाप्ति हेतु

प्रतिदिन प्रात: सांय यज्ञ के पश्चात् गायत्री मन्त्र का कम से कम ग्यारह बार अर्थ सहित पाठ करें व गहरा श्वास भरकर ओम् की लम्बी ध्वनी करें।

स्वदेशी राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन सुखदायक जय हे, भारत विश्व विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात मराठा। द्राविड़ उत्कल बंग।
कश्मीर, हिमाचल, यमुना, गंगा। विन्ध्य, जलधि तरंगा।
तव रक्षण हित जागें। तब हित शीश कटा दें।
गाएं तव जय गाथा। जन-गण मंगलदायक जय हे।
भारत विश्व विधाता। जय हे. जय हे. जय हे।

विशेष : यदि गोवा में समान कानून संहिता लागू है, तो पूरे भारत में क्यों नहीं? यदि पाकिस्तान व बंगलादेश में एक ही पत्नी का कानून है तो भारत में क्यों नहीं?

।।ओ३म् वयं राष्ट्रे जागृयामः-वेद।।
(हम राष्ट्र रक्षा हेतु जागते रहें।)

।। अंग्रेज अधिकारियों की ईसाई कांग्रेस के सहयोग से भारत से गद्दारी, आर्य खालसा, हिन्दुओं का विरोध और मुसलमानों व कम्युनिस्टों का सहयोग ।।

– मानवेशपुरी, भूतपूर्व सेक्शन आफिसर, भारत सरकार

स्वराज्य का प्रथम उद्घोष करने वाले व अंग्रेजों के विरूद्ध आन्दोलन की प्रेरणा देने वाले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की यह मान्यता थी कि पूर्ण स्वराज्य के लिए देश का नेता स्वदेशी मिट्टी व संस्कृति से जुड़ा हुआ होना चाहिए। इस मान्यता की अवहेलना करके ए०ओ०ह्यूम ईसाई अंग्रेज द्वारा आर्यसमाज के क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता आन्दोलन को समाप्त करने हेतु बनायी गई कांग्रेस ने अर्द्ध स्वतन्त्रता के पश्चात् भी देश के प्रथम गवर्नर जनरल माउण्ट बेटन व सेना के अधिकारी अंग्रेज ही रखे।इसी कारण देश के स्वतन्त्र हो जाने पर और कश्मीर के महाराजा हरि सिंह द्वारा अपने प्रदेश को भारत में मिलाने की घोषणा कर देने पर भी वह पूर्णरूपेण भारत का न हो सका।अर्द्धस्वतन्त्रता का अभिप्राय यह है कि हम अंग्रेजों की परतन्त्रता से तो मुक्त हुए परन्तु ई० कांग्रेस मु०लीग व कम्युनिस्ट प्रभावित देशद्रोही नेताओं के गुलाम हो गये।

दोनों विदेशी सेना अधिकारी लॉकहार्ट व बुशेर ने चर्चिल द्वारा

दिए गए निर्देश के अनुसार मुसलमानों का साथ देने हेतु पठान कबायलियों और पाकिस्तान की सेनाओं के द्वारा सम्मिलित रूप से जम्मू कश्मीर पर आक्रमण करने की योजना बनाई ।जिन्ना व मुस्लिम लीग को उकसाकर कश्मीर पर पाकिस्तान का कब्जा करवाने के पश्चात् इन दोनों अंग्रेज अधिकारियों ने विवाद को और उलझाने हेतु इसे संयुक्त राष्ट्र संघ को सौंपने की परामर्श दी । प्रमाण के लिए देखें मेजर जनरल राजेन्द्र नाथ द्वारा लिखित पुस्तक-'मिलेट्री लीडरशिप इन इण्डिया'.. ।

सरदार पटेल पाकिस्तान द्वारा दबाये गए कश्मीर के भू-भाग को खाली कराये बिना उसे ५५ करोड़ रूपया देने के पक्ष में न थे परन्तु गॉधी ने उनकी बात न मानी ,वे कश्मीर विवाद को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने के पक्ष में नही थे और न ही विभाजन के पश्चात् मुसलमानों की अलग बस्तियॉ बसाने के पक्ष में थे परन्तु माउण्ट बेटन आदि से प्रभावित नेहरू ने उनकी बात न सुनी ।वे भारत में विदेशी सेना अधिकारी नही रखना चाहते थे और,न ही भारतीय सेनाओं को कश्मीर में आगे बढने से रोकना चाहते थे परन्तु प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू ने यहां भी उनका विरोध करके भयंकर भूल की ।जबकि लार्ड माउण्ट बेटन ने मेजर जनरल राजेन्द्र नाथ जी को कहा था कि 'मैं स्वयं ये चाहता था कि कश्मीर पाकिस्तान मे मिल जाए' 'मि० ली० इन इण्डिया' ।संयुक्त राष्ट्र संघ का विषय बन जाने पर पाकिस्तान को

कश्मीर का मामला अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर उठाने का अवसर मिल गया 'इण्डियन एक्सप्रेस ७-६-१६६०' ।नेहरूजी ने अम्बेडकर जी की बात न मानकर शेख अबदुल्ला के लिए कश्मीर में धारा-३७० अस्थाई कहकर भी लगवा दी ।इसी के कारण ही भारत को पाकिस्तान के तीन आक्रमणों का भी सामना करना पड़ा ।सरदार पटेल राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता हेतु आरक्षण के पक्ष में नही थे ।

२६-५-१६४६ को संविधान सभा की बैठक में जब कुछ मुसलमान लीडरों ने मजहब के आधार पर विशेष अधिकारों की बात की तो उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया यदि वे विशेष अधिकार चाहते हैं तो पाकिस्तान चले जायें ,क्योंकि भारत के टुकड़े करे वह देश उन्हीं के लिए बनाया गया है ।अत्यंत खेद से लिखना पड़ता है कि नेहरू ने उनकी भावनाओं को कुचलकर विघटन व अशान्ति हेतु सदा के लिए देश को नरक के गर्त्त में धकेल दिया ।अन्त में दुःखी होकर पटेल जी ने अपने गृहमन्त्री पद से त्यागपत्र भी दिया ।सबसे अधिक आश्चर्य इस बात का है कि महात्मा और सत्य का मसीहा कहलाने वाले गांधी पता नहीं नेहरू से क्यों डरते थे ?उसने कभी भी नेहरू को अनिष्ट कृत्यों से नहीं रोका। नेहरू यदि देश व संस्कृति के प्रति पूर्ण भक्ति रखते तो भारत का इस तरह से विनाश कभी न होता ।अपनी आत्मकथा में वे स्वीकार करते हैं -My thoughts and approch to life are more akin what is called western then

estern .अर्थात् मेरे विचार व जीवनशैली स्वदेशी न होकर विदेशी अंग्रेजी सभ्यता से अधिक मेल खाती है । वे स्वयं कहते थे कि मैं शिक्षा से ईसाई और सभ्यता से मुस्लिम हूं ।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् विदेशी अंग्रेज अधिकारी यदि भारत में न रहते तो अब तक कश्मीर का विवाद और उत्तर-पूर्व एवं केरल आदि की ईसाई मुस्लिम समस्या भारत में आतंकवाद का कारण न बनती ।सम्भवतः आज भी ईसाई कांग्रेसी यह नहीं जानते कि अंग्रेजों द्वारा प्रभात की अपेक्षा रात के बारह बजे और प्रतिपदा या पूर्णिमा की अपेक्षा १५ अगस्त का काला दिन इसलिए देश के विभाजन हेतु चुना था ,क्योंकि जापान को परमाणु बम द्वारा विनष्ट करके इसी दिन पूर्ण रूपेण अंग्रेजों ने उसे अपना गुलाम बनाया था ।

खेद का विषय है कि वा स्तविकता से अनभिज्ञ कॉंग्रेस के अधिकारी भी अंग्रेजी राज्य को भारत हेतु वरदान बताते थे ।कुछ कांग्रेसी नेता जार्ज पंचम को लक्ष्य करके बड़े उत्साह से 'लौंग लिव द किंग-लौंग लिव द किंग' के गीत भी गाते थे ।अर्थात् अंग्रेज राजा व उसका राज्य चिरायु हो । आज भी दुर्भाग्यवश कांग्रेसी जन स्वदेश हेतु जीवन बलिदान करने वाले शहीदों की भावनाओं को कुचलकर २५ करोड़ अरब डालर के कारण क्या किसी विदेशी अध्यक्ष की दासता नहीं कर रहे ? जब कि देश के सच्चे स्वराज्य हेतु कांग्रेस से दस वर्ष पूर्व १८७५ में महर्षि दयानन्द ने क्रान्तिकारी ग्रन्थ आर्याभिविनय मे

कहा था 'अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी शासन न करे और हम कभी पराधीन न हो' ।इसी ग्रन्थ में लिखे एक-एक वेद मन्त्र को पढ़कर ही क्रान्तिकारी शहीद चन्द्रशेखर आजाद प्रतिदिन भोजन करते थे ।

शोक का विषय है कि भारत के बंटवारे , कश्मीर के झगड़े और नागालैण्ड की आजादी के मसले से भी देश के नादान नेताओं और जनता ने कोई शिक्षा न ली और पुनः कांग्रेस का अध्यक्ष एक विदेश में जन्मी महिला को बना दिया ।इसी अध्यक्षा के काल में प्रेरणा पाकर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इग्लैण्ड में यह वक्तव्य दे दिया कि अंग्रेजों का राज्य भारत के लिए उत्तम था ।

दुःख का विषय है कि देश के नादान नेता तथा जन यह नहीं जानते कि अंग्रेजों ने बन्दरगाहों से जोड़ने वाला रेलों का जाल व अंग्रेजी भाषा भारत की उन्नति नहीं अपितु यहां के खनिज पदार्थ समुद्री मार्ग से अपने देश को भेजने के लिए और भाषा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापार को तेज करने के लिए बनायी थी ।सभी बुद्धिजीवी यह जानते हैं कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भी भारत की विदेशी कांग्रेस द्वार जार्ज पंचम की स्तुति में जो गीत कांग्रेसियों द्वारा १९१२ में गाया गया था,वही गीत 'जन-गण-मन अधिनायक'अब भी राष्ट्र-गान के रूप में चल रहा है ।

४-९-१९७७ को भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत राज्य सभा

के कांग्रेसी सदस्य फ्रैंक एन्थोनी ने कहा था 'विदेशी आर्यों द्वारा भारत में लायी गयी संस्कृत भाषा भी विदेशी है अतः इसे भारत के संविधान से निकाल दिया जाए । गत दिनों केन्द्रीय सरकार के पेट्रोल मन्त्री ऐय्यर ने वीर सावरकर जी का जीवन परिचय पट्ट अण्डेमान की जेल से हटाकर अपने आप को अंग्रेजों का चाटुकार सिद्ध किया । यह वही ऐय्यर है जिसने कुछ वर्ष पूर्व विदेश में रहते हुए चीन द्वारा भारत पर हमले के समय कम्युनिस्टों के लिए चन्दा एकत्रित किया था।

महर्षि दयानन्द ने कांग्रेस से दस वर्ष पूर्व और वावा गांधी के अंग्रेजों भारत छोड़ो से अनेक वर्ष पूर्व अंग्रेजों को भारत से निकालने का आन्दोलन चलाया था और अंग्रेजों द्वारा फैलायी गयी सुनियोजित भ्रान्ति कि आर्य लोग बाहर से आये के विरूद्ध आर्यों को ही भारत का आदि संस्थापक सिद्ध किया था ।इसी बात को भारत पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण डॉ०विष्णु श्रीधर वाकणकर ने अपने अन्य विशेषज्ञों के सहयोग से यह सिद्ध किया है कि आर्यों के विदेशी होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता -'टाइम्स आ० इ०२२-१२-८५' ।वस्तुतः 'आर्य' ईरान से आये नहीं अपितु उनकी उन्नति हेतु वहाँ गये थे ।

मोहन जोदड़ो व हड़प्पा की सभ्यता भी भारत के प्राचीन आर्यों की ही है- इ०ए०प्रे०३-८-१९८५ ।डॉ० एन आर बनर्जी निर्देशक राष्ट्रीय संग्रहालय और अन्य विशेषज्ञों ने ताशकन्द में यूनेस्को द्वारा

आयोजित संगोष्ठी में रूस,जर्मन,ईरान व पाकिस्तान से आये प्रतिनिधियों के मध्य यह निर्विरोध घोषणा की थी कि आर्यो के बाहर से आने का कोई तथ्य प्राप्त नहीं होता, वे वस्तुतः भारत के ही मूल निवासी हैं-' हिन्दुस्तान टाइम्स ३१-६-१६७०'। महर्षि दयानन्द के वैदिक साहित्य को पढ़कर मैक्समूलर ने भी स्वीकार किया कि वैदिककाल में आर्य लोग आर्यावर्त्त 'भारत' से ईरान गए थे-मै० , चि०ज०वर्क १-२३५ ।

लार्ड मैकाले अपने सहयोगी मैक्समूलर द्वारा ऐसा ही अनिष्ट कार्य करवा रहे थे। अपनी पत्नी को पत्र लिखते हुए मैक्समूलर कहता है कि मेरे द्वारा किए गये वेदों के अनुवाद को पढ़कर हिन्दू अपने धर्म से घृणा करने लगेंगे अर्थात् भारतीयों को ईसाई बनाना सरल हो जायेगा अपनी इस नीति के अन्तर्गत कम्युनिस्टों के द्वारा कांग्रेस के सहयोग हेतु केन्द्र सरकार में आने पर पाठ्यपुस्तकों मे अनेक अनिष्ट परिवर्तन कर दिए गये हैं ।जैसे कि प्राचीन आर्य लोग गोमॉस खाते थे,राम व कृष्ण हुए ही नहीं जबकि नासा के वैज्ञानिकों ने राम द्वारा समुद्र में बनाये गये पुल को भी खोज लिया है ।

अंग्रेजों ने सामान्य लागों को भ्रमित करने हेतु लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में वाई कॉम स्ट्रॉगफोल्ड की अध्यक्षता में १ अप्रैल १८६६ को एक गुप्त योजना बनायी ।इस गुप्त योजना में जार्ज'कॉल्डवेल' फादर बेस्छी रेवरेन्ट ,जी०यू०पोप आदि लोगों ने यह

निर्णय लिया कि महर्षि दयानन्द व आर्य समाज का विद्रोह शान्त करने हेतु यही एक मार्ग है कि आर्यों को भी विदेश से आया हुआ घोषित किया जाए और इसके साथ-साथ द्रविड़ नाम की एक मनमानी जाति भी दिखाकर आर्यों द्वारा उस पर बाहर से आकर आक्रमण करना भी प्रचारित कर दिया जाए। जिससे कि यह उत्तर दिया जा सके कि यदि हम अंग्रेज लोग विदेश से आने के कारण भारत छोड़े तो आर्य भी विदेशी होने के कारण भारत छोड़े।

ऐतिहासिक तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि १८६६ से पूर्व भारत के किसी भी ग्रन्थ में द्रविड़ नाम का कोई शब्द नही था। भारतीय जन अंग्रेजों के इस कुत्सित षड़यन्त्र का पर्दाफाश करें और अपने को भारत का मूल निवासी तथा दक्षिण भारतीयों को अपना मित्र समझें।आश्चर्य का विषय है कि जहां अंग्रेजों की नकल करके कम्युनिस्ट इतिहासकारों ने पाठ्यपुस्तकों में लिखा कि आर्य ईरान से भारत आये वहां ईरान के विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों में यह पढाया जाता है कि 'आर्य लोग' भारत से ईरान आये -'जुगराफिया पंज किताब'।

खेद का विषय है कि भारत को अपमानित करने हेतु अब भी विदेशी कांग्रेस आर्य -भारतीयों को पाठ्यपुस्तकों में विदेशी ही बता रही है।मुस्लिम लीग व कम्युनिस्ट विदेशी जन पार्टियां भी इसका समर्थन कर रही हैं।यह सर्वविदित है कि देश की स्वतन्त्रता हेतु जब

८५ प्रतिशत आर्यजन जेलों में यातनायें सहन कर रहे थे तब कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्य सचिव मि० जोशी अंग्रेजों का समर्थन व भारत के क्रन्तिकारियों व स्वतन्त्रता का विरोध कर रहे थे।१९४८ में कम्युनिस्ट पार्टी ने अमृतसर में अपनी एक गुप्त बैठक में सरदार पटेल आदि की हत्या करने की योजना बनाई थी जो कि स्व० बाबा गुरूमुख सिह आर्य द्वारा दिल्ली को सूचना देने पर विफल हो गई।

भारतीय संस्कृति के घोर विरोधी व चीन के हमले पर उसका लाल सलाम से स्वागत करने वाले देशद्रोही कम्युनिस्ट इतिहासज्ञ डॉ० डी०एन०झा ज्वाइन्ट सेकेट्री इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, दिल्ली विश्वविद्यालय ने १४-१५ फरवरी १९७९ को भारतीय इतिहास व संस्कृति पर आयोजित वार्षिक अधिवेशन में कहा था-हम जो आजकल भारत के इतिहास का पुर्नलेखन कर रहें हैं जैसे कि प्राचीन आर्य लोग पिछड़े हुए थे व गोमांस खाते थें आदि उदाहरणों से , उसमें योजनाबद्ध रूप से चीनी साम्यवादी जीवन व मार्क्स का साम्यवादी रंग दे रहे हैं।इसके परिणाम स्वरुप कुछ ही समय के पश्चात् ऐसे इतिहास से युक्त पाठ्यपुस्तकों एवं लेखों के द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग ही नहीं, अपितु साधारणजन भी वैदिक संस्कृति,वैदिक ऋषियों व वेद की पावन शिक्षाओं से दूर चले जायेंगे -इण्डियन एक्सप्रेस १४,१५-२-१९७९।

श्री गुरु तेग बहादुर लुटेरे थे, महावीर स्वामी ने गन्दे रहते थे तथा जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकार हुए ही नहीं, पृथ्वीराज चौहान

भगोड़ा था, स्वतत्रता सेनानी वीर सावरकर,भगत सिंह, चन्द्रशेखकर, बिस्मिल, सुभाष व जाट सभी आतंकवादी थे। औरंगजेब एक महान जिन्दा पीर थे स्वतन्त्रता के प्रेरणास्रोत वन्दे मातरम् गीत को भी पाठ्यक्रम से निकालने की कुचेष्टा की गई है।वन्दे मातरम का विरोध करने व हजारों हिन्दुओं के हत्यारे औरंगजेब और अंग्रेजों को श्रेष्ठ वताने के कारण कम्युनिस्ट स्वतः ही राष्ट्र द्रोही सिद्ध होते हैं। इस प्रमाण से यह सिद्ध होता है कि नागालैण्ड व कश्मीर मूवमेन्ट एवं आतंकी माओवादी कम्युनिस्टों का विरोध न करने वाले तथा श्री सुभाष चन्द्र बोस को तोजो का कुत्ता कहकर अपमानित करने वाले कम्युनिस्ट भी विदेशी कांग्रेस व नागालैण्ड विद्रोह का विरोध न करने वाले विदेशी मुस्लिम लीग की तरह ही देश के घोर घातक हैं। यह बात सर्वविदित है कि कम्युनिस्टों से प्रभावित ज्वाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में कुछ वर्ष पूर्व बुलाए गए कवि सम्मेलन में जब ९क पाकिस्तानी कवि द्वारा भारत के विरूद्ध अपमानजनक शब्द बोलने पर दिल्ली पुलिस के एक सैनिक ने आपत्ति प्रकट की तो कम्युनिस्ट लॉबी ने मुस्लिम कवि को तो कुछ नहीं कहा,किन्तु तब उस देशभक्त पुलिस कर्मचारी की जमकर पिटाई कर दी गई।

यह बात सभी बुद्धिजीवी जानते हैं कि कम्युनिस्ट तथा मुस्लिम लीग के सहयोग से चल रहे केरल व असम राज्य में १५ अगस्त के दिन तिरंगे के स्थान पर व तिरंगे के ऊपर चॉद-तारे का झण्डा फहरा

दिया गया था।

आज केन्द्र में विदेशी कांग्रेस से कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ देने वाली मुस्लिम लीग वही है जिसके नेता मि० जिन्ना ने सर सैयद अहमद खॉ द्वारा कही गई टू नेशन थ्योरी की बात कहकर भारत के टुकड़े करवाये थे जिसमें लाखों आर्य खालसा हिन्दू जन , मुसलमानों द्वारा बेरहमी से काट दिए गए थे ।सर सैयद अहमद खॉ ने अलीगढ़ मुस्लिम कॉलेज के प्रिंसिपल बेक के समक्ष यह स्वीकार किया था कि मुसलमान अंग्रेज के साथ तो मिलकर रह सकता है परन्तु आर्य हिन्दू खालसा के साथ नहीं।

अंग्रेजों से वफादारी का 'सर' ख़िताब प्राप्त करके इसी सैयद अहमद खॉ ने कहा था कि मैं किसी भी रूप में हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। भारत के विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना के मौलिक उत्तरदायी सर सैयद अहमद खॉ ही थे।

भारत का बंटवारा लाखों हिन्दुओं की हत्या व पचपन करोड़ रूपये की बर्बादी इसलिए की गई थी कि बंटवारे के पश्चात् मुसलमानों द्वारा गोहत्या,हिन्दू हत्या, नारियों का अपमान तथा आतंकवाद समाप्त हो कर भारत मे पूर्ण शान्ति की स्थापना होगी ।शान्ति के स्थान पर भारत में मुसलमानों द्वारा लगभग चार लाख आर्य खालसा हिन्दुओं को कश्मीर से खदेड़कर व जगन्नाथ मन्दिर,अक्षरधाम मन्दिर,गोधरा रेल,लाल किला ,संसद भवन तथा देश में विभिन्न स्थानों पर जानलेवा

हमले करके आतंकवाद की वृद्धि ही हुई है । भारत को मुस्लिम देश बनाने की जिहाद में जहाँ भारत पर आतंकवादी मुसलमानों द्वारा हमले हो रहे हैं, वहाँ पाकिस्तान तथा बंगलादेश में भी लाखों हिन्दुओं का कत्लेआम एवं धर्म-परिवर्त्तन किया जा रहा है। शेष बचे हुए आर्य खालसा हिन्दु माताओं बहनों व बेटियों से बलात्कार किया जा रहा है और उनकी सम्पत्ति लूटी जा रही है।

सरकार वोट के लोभ हेतु देशद्रोह के अभियोग से युक्त ईमाम बुखारी को तो खुला छोड़ रही है परन्तु बिना किसी अपराध के सिद्ध हुए शंकराचार्य को जेल भेज रही है । कुरान के आदेश के अनुसार गोहत्या तथा आत्मघाती हमले बढ रहे हैं ।समान कानून संहिता लागू करने के प्रश्न पर सभी मौलवी एक जुट होकर उसका विरोध करते हैं ।एक ओर तो जनसंख्या वृद्धि देश की कमर तोड़ रही है तो दूसरी ओर एक-एक मुसलमान वोट द्वारा भारत को मुस्लिम राज्य बनाने हेतु पचास-पचास बच्चे पैदा कर रहा है और कब्रिस्तान बनाकर उपजाऊ भूमि बंजर बना रहा है । ऐसी स्थिति में अब हिन्दू बच्चों को उच्च शिक्षा में प्रवेश व सरकारी नौकरियों का प्राप्त होना भी कठिन हो गया है ।

मानवतावाद की प्रतिमूर्ति मर्यादा पुरुषोत्तम राम नहीं विदेशी हमलावर बाबर का सत्कार करके व आतंकवादियों को पनाह देकर आतंकवादियों के गुरु व लादेन के सहयोगी मुशर्रफ का पुतला जलाने के स्थान पर पाकिस्तान के समयानुसार नमाज पढ़कर व दुबई का चांद

देखकर ईद मनाने वाले भारत के ये मुसलमान अपने आप को देशद्रोही व विदेशी सिद्ध कर रहे हैं।

मुस्लिम लीग व कम्युनिस्टों की सहायता से विदेशी कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया से विदेशी पादरी व क्रिश्चन्स देश के भोले-भाले हिन्दुस्तानियों को गुमराह करके धर्मान्तरण को बढ़ा रहे हैं।धर्मान्तरण को रोकने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा संसद सदस्य श्री ओम प्रकाश त्यागी जी ने हिन्दुओं को ईसाई बनने से रोकने हेतु १६७६ में संसद में एक बिल प्रस्तुत किया था। इसका उद्देश्य भोले-भाले गरीब लोगों को गुमराह करके अथवा प्रलोभन देकर ईसाई बनने से रोकना था।

अत्यन्त खेद का विषय है कि सोनिया व राजीव द्वारा जिस मदर टेरेसा कों भारत रत्न की उपाधि से शान्ति की देवी व वात्सल्य की मूर्ति कहकर सम्मानित किया गया, उसी ने इस बिल का सबसे अधिक विरोध किया।यह मदर टेरेसा वही विदेशी नन है जिसके अधीन कार्य करने वाले अनेकों पादरियों को गृह राज्य मन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने देशद्रोही कार्यों में संलिप्त जानकर मध्य-प्रदेश ही नहीं अपितु भारत को छोड़कर जाने का आदेश दिया था।

इसी मदर टेरेसा ने सूरत आर्य समाज को बेचने का दबाव डाला था। जब वहां के आर्य अधिकारियों ने मानने से इन्कार किया तो तब ईसाईयों द्वारा भारत को ईसाई बनाने में सहयोगी बनकर नोबुल

पुरस्कार प्राप्त करने वाली इस देवी ने क्रोध भरे शब्दों में कहा-' तो अच्छा मैं तुम्हें देख लूँगी'। यह था नोबल शान्ति पुरस्कार का सच्चा स्वरुप।

रोमन कैथोलिक मदर टेरेसा अपने बालगृह में किसी प्रोटेसटेन्ट ईसाई बालक को स्थान नहीं देती थी और कहती थी कि इसे मैं लेकर क्या करूँगी यह तो पहले से ही ईसाई है। यह बात सत्य है कि वह भारत से गरीबी दूर करने अथवा बच्चों को प्यार देने का कार्य नहीं करती थी अपितु हिन्दू गरीबों को ईसाई बनाने का कार्य करती थी। एक बार वह ताज पैलेस में आयोजित कान्फ्रेंस में उपस्थित जानकी देवी महा विद्यालय दिल्ली के विद्यार्थियों में ईसा मसीह का निशान क्रास बांट रही थी पंजाबी बाग की कुमारी मुदिता आर्य पुत्री ने उसे लेने से इन्कार किया, तब भी वह क्रोध में भड़क गयी थी। यह घटना १९९०-९१ की है। मदर टेरेसा के समान ही भारत में कार्य कर रहे अन्य पादरियों का उद्देश्य भी धर्मपरिवर्तन के द्वारा ईसाईयों का वोट बढ़ाकर नागालैण्ड व मिजोरम की भान्ति सम्पूर्ण भारत को ईसाईस्थान बनाना है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने १२-२-१९२१ को इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज वि०वि० से अपने मित्र पं०क्षेत्रश चन्द्र चट्टोपाध्याय को पत्र में लिखा था कि क्रिश्चन पादरी हमारी संस्कृति के महाशत्रु हैं तथा वे लोग भी जो कि भारत की छवि को विदेश में बिगाड़ते हैं.नवभारत भारत

टाइम्स २२-१-१९९४ । यह बात जानने योग्य है कि भारत के हिन्दुओं को विधर्मी बनाने हेतु १५०० करोड़ रूपया अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देशों से भारत में आता है । बहुत सा धन धर्म परिवर्तन हेतु मुस्लिम देशों से भी आता है जिसके कारण ईसाई तीन प्रतिशत बढ़ रहा है और मुसलमान १५ प्रतिशत बढ़ रहा है परन्तु आर्य खालसा हिन्दू २० प्रतिशत कम हो रहा है।

कत्लेआम से ईसाई,मुसलमान अथवा कम्युनिस्टों द्वारा हिन्दुओं को घटाना अथवा धर्म परिवर्तन से अपने मजहब को बढ़ाना ही मुख्य नहीं है अपितु इनका मुख्य उद्देश्य अपने वोट प्रतिशत को बढ़ाकर भारत में विदेशी विचारधारा का ईसाई ,इस्लामिक तथा कम्युनिस्ट शासन स्थापित करना है । आर्य खालसा हिन्दुओं को चाहिए कि ईसाईयों, मुसलमानों व कम्युनिस्टों के नागालैण्ड, मिजोरम, कश्मीर,केरल,प-बंगाल, असम में चल रहे हिन्दू विरोधी शासन से शिक्षा प्राप्त करके आर्य समाज के सहयोग से अपने देश धर्म व परिवार को बचाने का प्रयास करें।

राजीव गॉधी ने हिन्दू से ईसाई बनकर सोनिया के साथ विवाह किया और पोप का आर्शीवाद प्राप्त किया । मदर टेरेसा को सबसे अधिक सहायता सोनिया ने ही दी ।१९९०-९१ में मिजोरम चुनाव के अवसर पर ईसाई बनकर इसी विदेशी कांग्रेस प्रधानमन्त्री राजीव को वहॉ के बहुसंख्यक ईसाईयों ने इसीलिए अधिक वोट दिये थे क्योंकि

उन्हें यह आश्वासन दिया गया था कि कांग्रेस के जीतने पर वहां बाईबल के अनुसार शासन होगा। खेद का विषय है कि आर्य खालसा हिन्दू जन अंग्रेजो, मुसलमानो तथा कम्युनिस्ट माओवादीआतंकवादियों के अत्याचारों को अनदेखा करके अपनी मौत बुला रहे हैं।

आजाद हिन्द सेना को बनाकर देश को स्वतन्त्र करवाने वाले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का कम्युनिस्टों ने सदा विरोध किया है।जब उन्होंने आर्य समाज हेरीसन रोड में स्वतन्त्रता की प्रेरणा देने हेतु यह कहा कि गुलामों का कोई धर्म नहीं होता स्वतन्त्रता हेतु क्रान्ति करो और फिर सम्पूर्ण देश में वेद के अनुसार शासन करो, तब इस बात का मौलाना आजाद आदि मुस्लिम नेताओं ने घोर विरोध किया।महर्षि दयानन्द को भारतवर्ष का नव निर्माता मानने वाले प्रखर क्रान्तिकारी स्वदेशी नेता सुभाष जी जब कांग्रेस का अध्यक्षीय पद जीत गये तो तब नेहरू जी के गॉधी ने कहा था यह डॉ० पट्टा भी सीतारमैय्या की हार नहीं मेरी हार है।

हमारा यहां इन सब बातों को लिखने का अभिप्राय यह है कि ईसाई कांग्रेस, मुस्लिम लीग मुसलमान तथा कम्युनिस्ट तीनों ही नेताजी सुभाष बाबू के विरोधी थे।महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, सुभाष चन्द्र बोस तथा लाल बहादुरशास्त्री जैसे सच्चे स्वदेशप्रेमी नेता ऊपर लिखित विदेशियों के द्वारा मरवा दिये गये।जिससे कि भारत पर विदेशी शासन किया जा सके।महर्षि दयानन्द को ईसाई अंग्रेज ने

अली मर्दान खान के द्वारा दवाई के स्थान पर विष देकर मारा ।जिस अब्दुल रशीद ने स्वतन्त्रता सिपाही स्वामी श्रद्धानन्द को मारा उसे कांग्रेसी गाँधी ने अपना भाई बताकर गले लगाया ।

सुभाष चन्द्र बोस को विदेशी कांग्रेसी नेहरू के समय में दिल्ली के इशारे पर कम्युनिस्टों ने रूस में मारा-'के०जी०बी० फाइल रिकार्ड' दैनिक•आज ११-१२-०५ ।शहीद भगत सिंह के डी०ए०वी लाहौर के धर्म गुरू १०८ वर्षीय श्री पं०सुधाकर जी पूर्व कांग्रेसी नेता का भी यही मत है। ।ऐसा ही विचार जापान स्थित विदेशी भाषा महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री दोई महोदय का भी है। सच्चाई, सादगी, शाकाहारी व देश भक्ति से पूर्ण महर्षि दयानन्द के अनुयायी एवं स्वामी ब्रह्म मुनि आर्य के शिष्य देश के सच्चे 'लाल' श्री लाल बहादुरशास्त्री को कांग्रेस नेताओं के साथ होते भी हुए दिल्ली के इशारे पर कम्युनिस्टों की राजधानी ताशकन्द में विष देकर मरवा दिया गया ।जबकि सब यह जानते हैं कि नेहरू परिवार के रूस के साथ अच्छे सम्बन्ध रहे हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि आर्यावर्त्त 'भारत' के आर्य खालसा हिन्दू जागें और अपने शत्रुओं को पहचानकर ऋषियो ; गुरूओं तथा क्रान्तिकारियों के ऋण को चुकाने हेतु निडर होकर स्वराज्य को स्थापित करें ।जब हम विदेशियों के क्रूर व अत्याचारी राज्य होते हुए नही डरे तो अब क्यों डरें ।

ध्यान में रखें कि आज से १०० वर्ष पूर्व १९१० में अंग्रेज सरकार

के गुप्तचर विभाग निर्देशक मि० क्लीव लैण्ड ने कहा था -In my opinion the arya samaj is the most dangerous anti-British movement in India.it attacks social,religious and political conviction .अर्थात् मेरे विचार में भारत में ब्रिटिश शासन के लिए सबसे बड़ा खतरा आर्य समाज है ,जो सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक रूप से अंग्रेज सरकार पर हमला करता है।

टाईम्स ऑफ इण्डिया लन्दन के विशेष संवाददाता मि० वैलन्टाइल शिरोल कहा करते थे Wherever there is Arya samaj, there is unrest. अर्थात् देश में जहॉ-जहॉ आर्य समाज है वहॉ-वहॉ अंग्रेजी राज्य हेतु अशान्ति है।इसी बात को ध्यान में रखकर अंग्रेजों ने महर्षि दयानन्द को बागी संन्यासी की संज्ञा दी थी।

१६०६ में अंग्रेजों ने पटियाला पंजाब के तीस आर्य समाजस्थों को राजद्रोह के अपराध में कारागार भेज दिया था।अंग्रेजी सरकार के क्रिमिनल इन्टेलीजेन्स डिपार्टमेन्ट के निर्देशक स्टीवन्सन मूर ने आर्यों पर राजद्रोह का अभियोग सिद्ध करने हेतु १६१२ में निम्नलिखित रिपोर्ट तैयार की थी जिसमें वह लिखता है-

१-महर्षि दयानन्द अपने प्रवचनों में आर्यों के राज्य हेतु देशभक्ति व राष्ट्रीयता के शब्द प्रयोग करते थे।एक बार उन्होंने एक पादरी को कहा था कि अब तुम्हारे राज्य के पतन के दिन निकट हैं।महर्षि

दयानन्द अत्यन्त बुद्धिजीवी व देशभक्त क्रान्तिकारी व्यक्ति थे । उन्होंने गांधी से अनेक वर्ष पूर्व भारत के गरीबों ,मजदूरों व किसानों के लिए नमक आन्दोलन ,निःशुल्क जंगली लकड़ी आन्दोलन ,निःशुल्क न्याय दिलवाने का आन्दोलन तथा गौ रक्षा का आन्दोलन चलाया था ।

२-यद्यपि 'आर्य समाज' में सरकारी सेवा करने वाले अनेक व्यक्ति हैं फिर भी इनकी प्रवृत्ति अंग्रेज सरकार से विद्रोह पूर्ण ही है ।सन् १९०९ में ब्रिटिश जनसंख्या अध्यक्ष मि० बर्न ने लिखा था Dayanand feared Islam and Christanity because he considered that the adoption and adoptation of any foreign creed could endanger the national feelings he wished to foster अर्थात् दयानन्द इस्लाम और ईसाइयत से इसलिए शंकित थे क्योंकि उनका विचार था कि विदेशी मतों को अपनाने से देशवासियों की उन राष्ट्रीय भावनाओं को क्षति पहुंचंगी जिन्हे वे स्वतन्त्रता हेतु पुष्ट करना चाहते थे ।

१९११ मे ब्रिटिश जनसंख्या कमिश्नर मि० ब्लण्ट ने कहा था Arya samaj doctrine has a patriotic side.the arya doctrine and arya education alike sing the glories of ancient india and by so doing arouse a feeling of national pride in its disciples . अर्थात् आर्य समाज के सिद्धान्तों में देश भक्ति की प्रेरणा भरी है ।आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा समान रुप से आर्यवर्त्त- भारत के गीत गाते हैं ,और ऐसा करके स्वतन्त्रता हेतु अपने अनुयायिओं में राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना को जगाते हैं ।

३- लाला मुन्शी राम(स्वामी श्रद्धानन्द)अंग्रेजी सरकार की कड़ी आलोचना करते हुए कहते हैं कि वे सिपाही बड़े मूर्ख हैं जो ७-८ रूपये मासिक वेतन पर अंग्रेजी सेना में भरती होते हैं ।जब लोग गुरुकुल से पढकर निकलेंगे तब इन बातों को अच्छी तरह समझेंगें ।ऐसी ही बातें वे गुरुकुल कांगड़ी में भी कहते हैं ।

४-लाला लाजपत राय भी देश तथा विदेश में अंग्रेजी सरकार का डटकर खण्डन कर रहा है ।उसने कहा अंग्रेजी सरकार की आर्थिक नीति भारतीय उद्योग धन्धों को चौपट कर रही है । माण्डले जेल से छूटने के पश्चात् भी उसने कहा था कि अंग्रेजी सरकार के प्रति मुझ में कुछ परिवर्तन आने वाला नहीं ।

५-अप्रैल १९०८ लायलपुर आर्य समाज के तीसरे वार्षिक उत्सव पर आर्य नेताओं ने विदेशी चीनी खाने का निषेध किया ।

६- १०-६-१९०६ को लाहौर आर्य समाज के अधिकारी भक्त ईश्वर दास के घर पर एक गुप्त बैठक में अंग्रेजी सरकार द्वारा सिक्खों को हिन्दुओं से अलग करने के षड़यन्त्र से सावधान रहकर सिक्खों को मिलाने का विचार किया ।

७-डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर के प्रोफेसर भाई परमानन्द के घर की तलाशी से बम बनाने की लिखित विधि व सरदार भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह के लिए चन्दा इकट्ठा करने के प्रमाण मिले हैं ।

८-लायलपुर में अंग्रेजी सरकार द्वारा लाये गए कोलोनाइजेशन बिल'शहरी बस्ती विधेयक' के विरुद्ध आन्दोलन करने वाले लोग प्रमुख आर्य समाजी ही थे। २१-४-१६०७ को वहाँ लाला लाजपत राय सरदार अजीत सिंह व राम भज दत्त चौधरी के सरकार के विरूद्ध विष उगलने वाले और किसानों को भड़काने वाले भाषण हुए,इसी में भाई बाँके दयाल ने स्वरचित गीत 'पगड़ी सम्भाल जट्टा' गाया।

६-मि० ए०डी० रियनकोर्ट ने लिखा है कि १६०५ की बंगाल क्रान्ति महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रखर राष्ट्रवाद का प्रत्यक्ष प्रमाण ही थी।

१०- देश में सर्वप्रथम आर्य समाज लाहौर के अधिकरियों द्वारा १८७६ में अंग्रेजी कपड़ों की होली जलाकर विदेशी अंग्रेजी राज्य का घोर विरोध किया-स्टेट्समैन।

हमारे कहने का मूल अभिप्राय यह है कि आर्य खालसा हिन्दू 'ओंकार' की भगवा पताका के नीचे संगठित होकर भारत को ईसाई ,मुस्लिम व कम्युनिस्ट विदेशी तिकड़ी से मुक्ति दिलवाकर पूर्ण स्वतन्त्रता दिलवाये और शहीदों के ऋण को चुकायें।यह बात सदा ध्यान में रखें कि विदेशी ईसाई कांग्रेस , मुस्लिम लीग व कम्युनिस्ट तीनों संगठन देशद्रोही हैं।कश्मीर ,नागालैण्ड- मिजोरम ,असम केरल व आन्ध्र छत्तीसगढ आदि में आतंकवादियों द्वारा देशद्रोहपूर्ण कार्य और दिन-रात हो रही हिन्दुओं की हत्याओं का तीनों विरोध नहीं करते

।आतंकवाद के लिए भारत में आ रहे अस्त्र-शस्त्र चीन व पाकिस्तान के बने होते हैं और चीन बंग्लादेश व पाकिस्तान की सीमा से यहां आते हैं।दैनिक हिन्दू इंगलिश पत्र २७-१२-२००४ के अनुसार आन्ध्र में एक माओवादी कम्युनिस्टों के अड्डे पर छापा मारने पर वहां से इंगलिश व पाकिस्तानी हथियार तथा नक्सलवादियों को भड़काने वाला कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकारी का एक पत्र भी मिला।देशद्रोह पूर्ण प्रसिद्ध पुरुलिया काण्ड 'बंगाल' में रूस के विमान द्वारा 'उड़ीसा में मारे गए भ्रष्ट पादरी स्टेन के साथी' एक पादरी के सहयोग से कम्युनिस्ट आंतकवादियों को देने हेतु पाकिस्तानी हथियार फेंके गये थे।उस पादरी को देशद्रोह की धारा के अधीन कठोर दण्ड देने के स्थान पर ईसाई राजीव सरकार द्वारा चुपचाप छोड़ दिया गया।

संसद पर हमले में सम्मिलित मो० प्रोफेसर गिलानी को देशद्रोह के अभियोग से मुक्त करवाने हेतु उसकी सहयोगी वकील हक्सर एक कम्युनिस्ट है,जिसका पति होंगरे नागालैण्ड को भारत से पृथक करने वाले ईसाई संगठन का नेता है क्योंकि भारत के कम्युनिस्ट कश्मीर और नागालैण्ड आदि में आतंकवादियों द्वारा चल रही देशद्रोह की गतिविधियों को आजादी की लड़ाई मानते हैं।गरीबी दूर करने का थोथा नारा लगाने वाले कम्युनिस्ट राजधानी कोलकत्ता में ही एक ओर तो हजारों गरीबी सड़क की पटरियों पर पैदा होकर आधे भूखे रहकर प्राण त्याग देते हैं।दूसरी ओर क्या हरकिशन जैसे अनेक

कम्युनिस्ट नेता अरबों रूपयों के मालिक नहीं हैं ?

ये तीनों संगठन एक समान नास्तिक विचाधारा के हैं ,यदि कम्युनिस्ट ईश्वर को नकारता और धर्म को अफीम बताता है तो ईसाई व मुसलमानों का चौथे और सातवें आसमान पर रहने वाला खुदा नकली व झूठा है । यदि कोई मुस्लिम व ईसाई वैज्ञानिक सिद्ध करे तो हम उसे ११ लाख का पुरूस्कार देंगें ।तीनों संगठन संविधान द्वारा स्तुत्य देश की आर्थिक आधार शिला गौमाता के हत्यारे हैं।

पाश्चात्यप्रिय नेहरू से प्रभावित गांधी ने मुसलमानों को गो-हत्या न करने की शिक्षा देने की अपेक्षा आर्य खालसा हिन्दुओं को यह आदेश दिया कि वे मुसलमानों द्वारा गो-हत्या किये जाने पर उत्तेजित न हों अपितु उन्हें प्रसन्न रखने हेतु मस्जिदों के सामने अपनी धर्म यात्रा के बाजे न बजायें -भारतीय इतिहास कोष पृष्ठ संख्या-१२२।

सत्य वक्ता निर्भीक होता है परन्तु बाबा गांधी मुसलमानों से इतना डरता था कि उसने मन्दिरों में तो ईश्वर अल्ला तेरो नाम गाया परन्तु किसी भी मस्जिद में अल्ला ईश्वर तेरो नाम नहीं गाया ।

मुशर्रफ द्वारा स्पष्ट रूप से यह कह देने पर भी कि भारत हिन्दू बाहुल्य देश होने के कारण हमारी उससे मित्रता नहीं हो सकती ।फिर भी देश के गांधी जैसे नादान नेता उसकी ओर मैत्री का हाथ और सीमा पार बस लेजाने का उपहार भेंट करके बदले में कारगिल,अयोध्या, लाल किला व संसद भवन पर पाकप्रशिक्षित आतंकवादियों के हमले से

देशभक्तों की लाशों के ढेर प्राप्तकर रहे हैं।

विनाशक्कारी तिकड़ी सरकार हेतु यह अत्यन्त लज्जा का विषय है कि जम्मू कश्मीर में हुर्रियत नेताओं के द्वारा पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाने पर तो कोई कार्यवाही नहीं होती परन्तु देशभक्तों द्वारा भारत माता की जय के नारे लगाने पर प्रदेश पुलिस द्वारा बेरहमी से डण्डे बरसाये जाते हैं -पंजाब केसरी ४-२-०६ ।इससे बढकर सरकार की गद्दारी का और क्या प्रमाण हो सकता है ?

तीनों द्वारा शासित कश्मीर, असम- केरल व नागालैण्ड में सार्वजनिक रूप से गोहत्या होती हैं व उसका मांस बेचा जाता है ।यह सभी जानते हैं कि मुसलमानों की 'ईद' गोहत्या के बिना पूर्ण नहीं होती। शर्म की बात है कि सरकार उच्चतम न्यायालय एवं संविधान की अवहेलना करके मुस्लिम व ईसाईयों के पक्ष में विधेयक पारित कर सकती है परन्तु संविधान के अनुसार गौ-रक्षा का विधेयक पारित नहीं कर सकती ।जैसे इन लोगों को प्रसन्न करने के लिए सैकुलरिज्म की आड़ लेकर गौ हत्या की छूट दे रही है ठीक वैसे ही हमें भी अथर्व वेद १.१६.४ मानव धर्म की आज्ञा को पूर्ण करने हेतु गो- घातकों की हत्या की छूट होनी चाहिए।

ये तीनों देशद्रोही व हिन्दू तथा गोहत्यारे होने के साथ-साथ विदेशी अंग्रेजों के पिट्ठू भी हैं। एक की अध्यक्षा व सलाहकार विदेशी हैं ;दूसरे कम्युनिस्ट गुजरात में हिन्दुओं को जिन्दा जलाये जाने की

घटना से मारे गए मुसलमानों को अमेरिकनों के सामने रखकर बुश के द्वारा मोदी के यूरोप प्रवेश पर रोक लगवाता है । ११ सितम्बर को अमेरिका के ट्रेडसेण्टर आदि एवं इंग्लैण्ड में हुए पाकिस्तानी मुसलमानों द्वारा आतंकवादी हमले के सिद्ध होने पर भी ब्लेयर और बुश मोहम्मद मुशर्रफ को हिन्दू विरोधी होने के कारण भरपूर सहायता दे रहे हैं ।बाईबल व कुरान दोनों में ही गैर मुस्लिम ,ईसाई 'हिन्दू' को मारने का आदेश है-बाईबल लूका-१९.२७पृ-७०,कुरान १०.९सूरा तोबा ५ पृ १५८ । माओवादियों द्वारा नेपाल, भारत मे मारे गए अधिकतर लोग हिन्दू ही हैं।

बाईवल, कुरान व कम्युनिस्टों का दास कैपिटल ये तीनों पुस्तकें विदेशी हैं, इनकी भाषा विदेशी है इनके आदेश देने वाले मोहम्मद ,ईसामसीह, माओ व मार्क्स भी विदेशी हैं ।इन तीनों गोहत्यारे व आतंकवादी संगठनों के नेताओं का मूल स्थान योरूशलम, मक्का-मदीना व चीन-रूस भी विदेशी हैं ।इन तीनों संगठनों के मुख्य तीर्थ स्थान भी यही विदेशीं देश हैं ।ये तीनों नास्तिक संगठन भारतीय इतिहास व संस्कृति के नाशक हैं। महर्षि दयानन्द वे पहले क्रान्तिकारी देशभक्त हैं जिन्होंने लगभग १३० वर्ष पूर्व अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के १२वें,१३वें व १४वें समु० में इन तीनों का खण्डन करते हुए कहा था कि जब तक ये आतंकवादी नास्तिक मत रहेंगे तब तक भारत व विश्व में शान्ति स्थापित होना कठिन है। प्राचीन भारतीय विज्ञान

,आयुर्वेद व कला-कौशल के हजारों ग्रन्थ इन्ही लोगों ने जलाये हैं। आज इन तीनों का संयुक्त शासन भारतीय संविधान से विरूद्ध मजहब व जाति के आधार पर कश्मीर,आन्ध्र,व अलीगढ़ के मुस्लिम विद्यालय को आरक्षण और करोड़ों रूपया देकर भारत में फूट के बीज बो रहा है।इससे भी अधिक दुःख की ये बात है कि ईसाई व मुसलमानों के विद्यालयों में गरीब हिन्दुओं को पढने का आरक्षण न देकर तथा उसे हिन्दू पिछड़े हुओं से पृथक रखकर देश को पुनः गुलामी की ओर ले जा रहा है।जबकि चीन व जापान ने अपने यहां से लाखों मुस्लिम व ईसाई लोगों को मार व निकालकर देश में एकता तथा शान्ति की स्थापना की।

आर्य, खालसा, हिन्दुओ को चाहिए कि पुनः गुलामी से बचने के लिए वे अपना पारिवारिक वोट बढायें ,अवश्य वोट डालें और उसी व्यक्ति को अपना नेता मानें, जो भारत में जन्मा हो और ऋषियों,मुनियों व गुरुओं की वैदिक संस्कृति पर चलता हो इंग्लैण्ड,अमेरिका,म्यांमार व इटली आदि देशों में भी वही व्यक्ति राज गद्दी पर बैठ सकता हैं जो कि वहाँ जन्मा हो ,कम से कम १४ वर्ष तक उसी देश में रहता हो, जिसने किसी और देश या मजहब वाली औरत से विवाह न किया हो व जिसका मजहब उस देश का मूल मजहब रोमन कैथोलिक ईसाई या प्रोटेस्टेन्ट ईसाई ही हो।

यदि बाबा गाँधी बहुमत प्राप्त सरदार पटेल के स्थान पर विदेशी विचार प्रिय जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमन्त्री न बनाते और मुस्लिम

बनी इन्दिरा व ईसाई बने राजीव-सोनिया आदि भारत के नेता न बनते तो देश के इस तरह से टुकड़े , गौओं की हत्या,महिलाओं ,बच्चों व महापुरूषों का अपमान और कश्मीर व मिजोरम का आतंकवाद तथा तलाक ,धर्म परिवर्तन व गौहत्यारों की वृद्धि करने वाले पक्षपातपूर्ण कानून इस देश में न होते ।

यदि मुगलों और अंग्रेजों के अत्याचारी शासन के समान वर्त्तमान में भी ईसाई मुस्लिम व कम्युनिस्ट आतंकवादियों द्वारा निर्दोष आर्य खालसा हिन्दुओं व गौओं की बर्बरतापूर्ण हत्या; मन्दिरों, गुरुद्वारों ,गुरुकुलों आश्रमों और आर्यसमाजों पर हमले; महापुरुषों व वैदिक मान्यताओं का अपमान एवं विदेशी पादरियों द्वारा गरीबों का धर्म -परिवर्तन ही होना था तो फिर लाखों क्रान्तिकारियों के बलिदान से प्राप्त इस तथाकथित स्वतन्त्रता का क्या औचित्य रहा ?

यदि बंटवारे में लाखों लोगों का खून व माताओं बहनों बेटियों का अपमान करवाकर भी विनाशकारी विदेशी तिकड़ी सरकार द्वारा देश के मौलिक नागरिकों का दोगले संविधान और आरक्षण के नाम पर अन्याय-पूर्ण शोषण ही होना था तो फिर देश को काटकर पाकिस्तान बनाने का क्या औचित्य रहा?

जो लोग इतना सब कुछ होने पर भी इस्लाम, ईसाई या कम्युनिस्ट मजहबियों से समझौता करके शान्तिपूर्वक चलने की बात करते हैं,वे नादान यह नहीं जानते कि इन तीनों की पुस्तकों मे धर्मप्रेमी

भारतीयों हेतु नफरत तथा कत्लेआम का आदेश है ।

बढ़ रहे अत्याचार को रोकने हेतु यह परम आवश्यक है कि आर्य खालसा हिन्दूजन संगठित होकर एक सशक्त आन्दोलन चलायें ।सदा यह ध्यान में रखें कि अत्याचार करना यदि पाप है तो अत्याचार सहना महापाप है । मुसलमानों ,ईसाईयों व कम्युनिस्टों पर न तो अत्याचार होते हैं और न ही उनके मजहबी नियम व पूज्य नेता गण ही अपमानित होते हैं, क्योंकि वे आन्दोलन हेतु तैयार रहते हैं ।हमारे सेवानिवृत्त जनों को चाहिए कि देश व धर्म की रक्षा हेतु समय निकालें और जब भी कोई नियम हमारे विरुद्ध बने तो उसका अधिक से अधिक लेखों, गोष्ठियो, पत्रक वितरणं व विरोध प्रदर्शनों द्वारा प्रतिकार करें ।कम से कम एक गरीब अनाथ बालक व गाय को गोद लें समाज मन्दिर व गुरूद्वारे में अनाथों को शरण देकर शिक्षित करें ।

संगठन को प्रबल बनाने के लिए जाति-पाति, छुआ-छूत, दहेज प्रथा भाग्यवाद व जड़ कबर पूजा का त्याग करें। इस बात को कभी न भूलें कि महातपस्वी शिव, मर्यादा पुरुषोत्तम राम एवं योगेश्वर कृष्ण द्वारा विधर्मियों को विनाश करने की प्रेरणा प्राप्त करने की अपेक्षा हमने जड़ भवनों के समक्ष सिर झुकाकर शत्रुओं द्वारा सहस्रों सिर ही कटवाये हैं ।वेद द्वारा प्राप्त भाग्य से पुरुषार्थ बड़ा है इस ज्ञान को न पाकर चन्द मन्द बुद्धि पुजारियों ने मुहूर्त के नाम पर आर्य हिन्दू राजाओं को समय पर आक्रमण को रोककर राष्ट्र को शत्रुओं का

गुलाम ही बनवाया है ।

महर्षि बाल्मीकि, राम, कृष्ण, गुरूगोविन्द सिंह व महर्षि दयानन्द के समान सदा क्रान्तिकारी बनकर अत्याचार को कुचलते रहें और अन्याय, शोषण अपमान और आतंकवाद को ईश्वर की लीला या भाग्य का फल कदापि न समझें । शत्रु इन्हीं बातों से हमें बांटकर हम पर शासन करते हैं । इसके साथ-साथ यह भी परम आवश्यक है कि देश में रह रहे उन नामलेवा मुसलमानों ईसाईयों व कामरेडों को भी अपने साथ जोड़ें ।जोकि अपनी तरह ही भारतवर्ष ,भारतीय संस्कृति ,राष्ट्रभाषा हिन्दी का सत्कार करते हैं ।वस्तुतः ये लोग न तो कुरान बाईबल व दास कैपिटल पढ़ते है नही उस पर श्रद्धा रखते हैं तथा नही चलते हैं ।इन लोगों को अपने साथ जोड़कर और उनके विचारों को मोड़कर आन्दोलन को शीघ्र सफल किया जा सकता है । मुसलिम अभिनेताओं को चाहिए वे अंग्रेजों के समान बाबर, गजनी, गौरी और औरंगजेब आदि मुसलिम विदेशी लुटेरों द्वारा भारतीयों पर हुए अत्याचारों पर भी चलचित्र बनाकर अपनी देशभक्ति का परिचय दें। यदि भारत के मुसलमान दाराशिकोह, आश्फाक उल्ला खां, अब्दुल हमीद एवं मुहम्मद करीम छागला के समान देशभक्त बनें तो समस्या ही सुलझ जाये।

पढ़े-लिखे वृद्धजन आन्दोलन को तीव्र करने हेतु घर का कुछ मोह त्यागकर धर्म परिवर्तन तथा सीमाओं से घुसपैठ रोकने हेतु वहां

आश्रमों मे बैठकर यथा-योग्य शिक्षण का कार्य करते हुए विद्यार्थी सेना को तैयार करें ।माता पिता बच्चों के साथ अपना सम्बन्ध धन के स्थान पर धर्म को बनायें ।अपनी सच्ची सन्तान तथा दायभाग का अधिकारी उसी को समझें जो बल हेतु प्रतिदिन व्यायाम ,धर्म ज्ञान हेतु प्रतिदिन ओम् का ध्यान व वेद का ज्ञान तथा सच्चा नागरिक कहलाने हेतु सेवा और क्रान्तिकारियों का अनुसरण करता हो ।प्रति सप्ताह आर्य सत्संग में भाग लेता हो ।विद्याध्ययन से समय मिलने पर संगठन की रक्षा हेतु शिविरों, उत्सवों व आन्दोलनों में सेवा करता हो ।

यह क्रान्तिकारी आन्दोलन तब तक न रुके कि जब तक संविधान की धारा ४४ के अनुसार एक समान कानून संहिता तथा संविधान की धारा ४८ के अनुसार गौ रक्षा का विधेयक पारित न हो जाये एवं भूख से मर रहे किसानों व विद्यार्थियों को बचाने हेतु हज यात्रा-भवनों पर नष्ट किया जा रहा अरबों रूपयों का धन देश के गरीबों के उत्थान हेतु न लगा दिया जाए ।यही है आर्य खालसा हिन्दुओं पर बढ़ रहे अत्याचार व आर्यावर्त्त-भारत की हो रही हत्या का उपचार।कुछ प्रमाण सौजन्य से स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ।

विशेषः—इस पुस्तक को अधिक से अधिक विभिन्न भाषाओं में छपवाकर एवं पूरे देश में बंटवाकर अपनी देशभक्ति का परिचय दें।

सामाजिक क्रांति हेतु सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।